BA Part - II

History Notes

By - Dr. Durga Bhawani

BA II History (Subsidiary)

Q. प्लासी की लड़ाई के कारणों एवं परिणामों का वर्णन करें।

Ans:— प्लासी का युद्ध भारतीय इतिहास में विशेष राजनैतिक महत्व रखता है। इस युद्ध ने देश की राजनीति में महान परिवर्तन ला दिया। इस युद्ध के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं।

(1) अंगरेजों की महत्वाकांक्षा — अंग्रेज फ्रांसीसीयों का प्रभाव समाप्त करना चाहते थे। अलीनगर की संधि में फ्रांसीसीयों के निष्कासन की बात सिराजुद्दौला ने स्वीकार नहीं की उसने केवल अंगरेजों के शत्रुओं से मित्रता न रखने का आश्वासन दिया था। संधि की शर्तों के बावजूद चन्दन नगर पर अंगरेजों ने मार्च 1757 ई. में आक्रमण कर दिया किन्तु नवाब फ्रांसीसियों पर आक्रमण के पक्ष में नहीं था बल्कि उसने फ्रांसीसियों को सैनिक सहायता दी। बंगाल में अंगरेजों और फ्रांसीसियों के बीच कभी युद्ध नहीं हुआ था। अतः बंगाल में फ्रांसीसियों को अंग्रेजों का शत्रु मानने के लिए तैयार नहीं था।

सिराजुद्दौला फ्रांसीसियों को अंग्रेजों की तरह सुविधा देकर उन्हें अंगरेजों के खिलाफ खड़ा करने की योजना बना रहा था और स्वयं मध्यस्थता की निर्णायक भूमिका निभाना चाहता था किन्तु इसकी नीति का पता चलने पर अंग्रेज इससे नाराज हो कर युद्ध करने पर उतारू हो गए।

(2) बंगाल को प्राप्त करना — अंग्रेज हर परिस्थिति में आर्थिक और राजनैतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थान बंगाल को प्राप्त करना चाहते थे। उसे बंगाल को प्राप्त करने हेतु किसी न किसी बहाने की आवश्यकता थी, जो उन्हें प्लासी की लड़ाई के रूप में मिल गया।

③ किलेबन्दी – सिराजुद्दौला के नाना अलीवर्दी खाँ ने अंग्रेज और फ्रांसीसियों को किलेबन्दी ना करने की स्पष्ट चेतावनी दे दी थी, परन्तु उसके मरते ही फिर किलाबन्दी आरंभ हो गई। सिराजुद्दौला ने भी किलेबन्दी की मनाही की लेकिन अंग्रेजों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया लेकिन फ्रेंच कम्पनी ने किलेबंदी रोक दी। इस कारण सिराजुद्दौला और अंग्रेजों के संबंध कटु हो गए और युद्ध का ये भी एक कारण बन गया। इन सब के बावजूद अंग्रेज व्यापारी सिराजुद्दौला के विरोधियों की सहायता कर रहे थे।

सिराजुद्दौला के असन्तुष्ट दरबारियों तथा अन्य शत्रुओं को अंग्रेज शरण दिए हुए थे और उनकी सहायता भी करते थे। इस बात से सिराजुद्दौला अंग्रेजों से चिढ़ा रहता था। इतना ही नहीं अंग्रेजों ने नवाब की इच्छा के विरुद्ध ढाका के दीवान राजबल्लभ के पुत्र कृष्ण बल्लभ को भी अपने यहाँ शरण दी थी। अब सिराजुद्दौला के गुस्से का ठिकाना ना रहा और युद्ध अवश्यम्भावी हो गया।

④ सुविधाओं का अनुचित उपयोग – मुगल शासकों द्वारा जो सुविधाएँ अंग्रेजों को दी गई थी, उसका वे दुरुपयोग कर रहे थे। अपने माल के साथ भारतीय व्यापारियों के माल को भी अपना माल बताकर वे चुंगी को बचा लेते थे और उनसे स्वयं चुंगी वसूल करते थे। इससे भी आपसी संबंध बिगड़ गए और युद्ध की स्थिति स्पष्ट हो गयी।

⑤ उत्तराधिकार के मामले में हस्तक्षेप – अंगरेज सिराजुद्दौला के विरोधी उत्तराधिकारियों के पक्ष में झुक रहे थे। ढाका के नवाब की विधवा बेगम तथा उसके मौसी के पुत्र शौकत जंग का

भी अंग्रेज समर्थन किया करते थे। ऐसी परिस्थिति में सिराजुद्दौला उनसे रुष्ट हो गया और उनसे युद्ध करने की ठान ली। उसने यह भी निश्चय कर लिया कि अब बंगाल से अंग्रेजों को निकाल कर ही दम लेंगा।

जनवरी 1756 ई० में सिराजुद्दौला ने कासिम बाजार स्थित अंग्रेजों के कारखाने पर अधिकार कर लिया इसके बाद वह कलकत्ता की ओर बढ़ा 18 जून 1756 ई० को उसने कलकत्ते पर आक्रमण किया और उस पर अधिकार कर लिया।

इसी समय कालकोठरी की घटना घटी। जैसा कि इतिहासकारों ने बताया है कि 146 अंग्रेजों को एक कोठरी में बंद कर के मार डाला गया। 2 जनवरी 1757 ई० को मानिक चन्द के विश्वासघात के कारण कलकत्ता पर फिर से अंग्रेजों का अधिकार हो गया। अब अंग्रेजों ने सेनापति मीर जाफर और सेठ अमीचन्द को अपनी ओर मिलाकर सिराजुद्दौला को परास्त करने की योजना बनाई।

इसी समय क्लाइव ने सिराजुद्दौला पर अलीनगर की संधि भंग करने का आरोप लगाया और 22 जून 1757 ई० बंगाल की राजधानी मुर्शिदाबाद से 20 मील दूरी पर प्लासी नामक स्थान पर अंगरेजों और सिराजुद्दौला की बीच युद्ध आरंभ हो गया। सिराजुद्दौला का प्रधान सेनापति मीरजाफर था तथा उसकी सहायता के लिए यारलुत्फ खाँ, दुर्लभ राय और मीरमदन तीन मुख्य सेनापति थे। इन सबों के पास सेना की अलग अलग टुकड़ी थी जो हजारों की संख्या में थी लेकिन सिराजुद्दौला की एक छोटी टुकड़ी ने पहले आक्रमण किया आधे घंटे की लड़ाई में ही क्लाइव की कायरता और अकुशलता नजर आने लगी वह पराजय की सम्भावना को देखते हुए पीछे लौट गया। परन्तु मीरजाफर, यार लुत्फ

खाँ और राय दुर्लभ अपनी पूरी सेनाओं के साथ अंग्रेजों से जा मिले। इधर मीरमदन और मोहन लाल अंग्रेजों एवं विश्वासघाती सेनानायकों का सामना वीरता पूर्वक करते रहे, किन्तु मीरमदन के मरते ही सिराजुद्दौला के सैनिकों का मनोबल टूट गया और वे मैदान छोड़ कर भाग निकले। अब क्लाइव बिना बाधा के आगे बढ़ा और सिराजुद्दौला को मैदान छोड़ कर भाग जाना पड़ा, इस प्रकार क्लाइव तथा अंग्रेजों की विजय हो गयी।

सिराजुद्दौला अपनी पत्नी बेगम लुत्फ-निशा के साथ मुर्शिदाबाद पहुँचा किन्तु असुरक्षित पा कर भाग निकला, लेकिन पकड़ा गया और मीर-जाफर के पुत्र मीरन ने उसे मार डाला।

मीरजाफर बंगाल का नवाब बना, अंगरेजों को पर्याप्त धन मिला। मीरजाफर ने कम्पनी के सभी विशेषाधिकारों को स्वीकार कर लिया और चौबीस परगनों की जागीरदारी कम्पनी को दी। कम्पनी को एक करोड़ सत्तर लाख रु० मिले, इसके सेवकों को अलग से 12 लाख मिला तथा स्वयं क्लाइव को दो लाख चौबीस हजार पौंड प्राप्त हुए। इतनी मोटी रकम पूरी करने के लिए मीरजाफर को महल के सोना - चाँदी के बर्तन भी बेच देने पड़े।

युद्ध के परिणाम — भारत के निर्णायक युद्धों में प्लासी के युद्ध का विशिष्ट स्थान है। प्लासी की घटना साधारण नहीं थी। इससे केवल पूर्वी भारत में ही नहीं बल्कि पूरे देश के इतिहास में एक नया मोड़ आया। सैनिक दृष्टि की अपेक्षा प्लासी के युद्ध का राजनीतिक और आर्थिक परिणाम विशेष महत्वपूर्ण था। इस युद्ध के बाद भारतीय राजनीति में अंगरेजों की प्रधानता कायम हो गयी। इस युद्ध ने बंगाल की धरती पर अंगरेजों को पैर जमाने का

अवसर दिया जिसके सहारे बंगाल और बाद में भारत की विजय का मार्ग प्रशस्त हुआ।

सिराजुद्दौला अंग्रेजों के विकास के रास्ते में एक बड़ी बाधा था और इसके मर जाने से अंग्रेजों को राजनीतिक प्रभुत्व बढ़ाने का अवसर मिल गया। मीर जाफर तो नाम मात्र का नवाब था वह तो अंग्रेजों के हाथों की कठपुतली था। अंग्रेजों के बढ़ते हुए प्रभाव का अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब मीर-जाफर ने स्वतंत्र रूप से काम करना चाहा तो अंग्रेजों ने मीर जाफर के बदले उसके दामाद मीर कासिम को नवाब बना दिया और जब मीर-कासिम से मतभेद हुआ तो पुनः बुढ़े मीरजाफर को बंगाल की गद्दी दे दी।

भेसन ने लिखा है — "There never was a battle, in which the consequences are so vast, so immediate and so permanent."

अर्थात "इतने शीघ्र स्थायी और प्रभाव-शाली परिणामों वाला कोई युद्ध नहीं हुआ।"

मुगल साम्राज्य के लिए प्लासी की युद्ध का परिणाम घातक साबित हुआ परन्तु अंग्रेजों के लिए आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त लाभकारी रहा। वहीं नैतिक दृष्टि से यह युद्ध विश्वासघात की विजय थी। प्लासी की लड़ाई के बाद भारत में दासता का युग आरंभ हुआ जिसमें इस देश का आर्थिक शोषण और नैतिक पतन भी हुआ।

———X———